100

पंचदेव

ज ग दी श प्र सा द म ण्ड ल सा हि त्य

सं. उमेश मण्डल

पंचदेव

पंचदेव

(जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य)

सं. उमेश मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-88421-77-5

दाम : ₹50/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

PANCHDEO : 100
Compilation by Umesh Mandal of Select Maithili Stories of Shri. Jagdish Prasad Mandal.

दू शब्द

पाँच गोट कथाक सङ्कलन, तँए पोथीक नाओं 'पंचदेव' राखल गेल अछि। 'पंचदेव'क एकसाए संग्रह अछि जे एकसंग प्रकाशित भऽ रहल अछि। साएओ संग्रहक कथा सभ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ सङ्कलित कएल गेल अछि। मण्डलजी मैथिली-मिथिलाक ओहन रचनाकार छैथ, जनिक रचनामे वर्त्तमान अछि, यथार्थ अछि। तँए, भाषा-साहित्यक दुनियाँमे मण्डलजीकेँ सभठाम जानल-मानल जा रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ट रचना तथा जीवन्त भाषाक प्रयोग हेतु मैथिली साहित्यक एकल अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड' श्री जगदीश प्रसाद मण्डलेजीकेँ प्रदान कएल गेलैन। तैसंग 'यात्री सम्मान', 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'विदेह बाल-साहित्य पुरस्कार', 'वैदेह सम्मान', तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सेहो सम्मानित छैथ। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आइ धरिक (4 अक्टुबर 2018) कथा सभकेँ सङ्कलन करैत बेहद प्रसन्नता भऽ रहल अछि। ऐ हेतु कथाकारक आभारी छी।

संगे, आदरणीय श्री मन्त्रेश्वर झा, डॉ. शिवशंकर 'श्रीनिवास', श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र आ गजेन्द्र सर (श्री गजेन्द्र ठाकुर)जीक आभारी छी.! जनिक मार्ग दर्शन पाबि किछु-किछु कए रहल छी।

क्रमश: प्रो. धीरेन्द्र कुमार, डॉ. शिकुमार प्रसाद, श्री ओम प्रकाश झा, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री राजदेव मण्डल आ श्री दुर्गानन्द मण्डलजीक सेहो आभारी छी।

ऐ साएओ पोथीक रचनाकेँ पुस्तकाकार रूप देबए-मे श्री नन्द विलास राय, श्री राम विलास साहु आ श्रीमती पुनम मण्डलक भरपूर सहयोग भेटल, ई सभकियो प्रसंशाक प्रात्र छैथ। हिनका सबहक प्रति हम आभार प्रकट कए रहल छी। तैसंग, पूरक सहयोगीमे अपन तीनू सन्तान क्रमश: पल्लवी, तुलसी आ मानबक चर्च करब सेहो आवश्यक बुझि रहल छी। तीनू बच्चाकेँ धन्यवाद-आशीर्वाद।

आइ-काल्हिक भागम-भागकेँ देखैत अपने लोकनिक सुविधा लेल छोट-छोट पोथीमे श्री मण्डलजी-रचित छोट-पैघ सभ तरहक कथाकेँ जोड़ियेलौं हेन। आशा अछि अपने लोकैनकेँ नीक लागत। सादर...।

उमेश मण्डल

निर्मली

24 नवम्वर 2018

कथाक सत्तैर-

ठकुआएल भुसवा

छठि-परमेशरीक घाटपर सुर्जक आगमन भऽ गेल। घाटपर छिड़ियाएल बाल-बोधसँ लऽ कऽ सियान-चेतन तकक मनमे पाबैनक पाबन परसाद पेबाक आशा जगल। जगबो केना ने करैत, एक तँ सरदीक सुर्जक अर्घ्य दोसर कुश-उपारसँ लऽ कऽ जल-अर्पण मतर-पीतर भोजन दानक संग नवमी-दशमी, कोजगरा-दियारी, भरदुतियाक पतियानीक सजल छठि-परमेशरीक सतमीक सुर्जक दर्शन ने छी। एते दिन कुश अर्पणक प्रक्रिया छल मुदा आब कुशियारक ने चलत।

पोखैरक चारू भीरक गाछ-बिरीछ, तलावक जलक जाइठक संग जलकर ऊपर चमचमाइत सुर्जक चमकी पसैर गेल। पसैर गेल घाटपर सजल छठिक डालीक ऊपर। एकसँ एकैस सूप, डगरा, डगरी, कोनियाँ, सुपती सजल घाटपर ठकुआएल भुसवा मने-मन छगुन्तामे पड़ल अछि। कनकनाइत मन पटपटेलै-

“कहू, एहेन हेबा चाही?”

अपने फुरने भुसवा बड़बड़ाइत, मुदा कियो डालमे सुननिहार नहि। ओना, रंग-रंगक वस्तुसँ सजल डाल। जहिना बरखा-जाड़क बीच संगमक चान-सुरूज शीतसँ शीताएल तहिना घाटपर पसरल सूप, डगरा आ कोनियाँ-सुपती सेहो।

भिनसुरका अर्घ्यक सुर्ज जकाँ उगैत आदी, हरदी, अरूआ, खमहरूआ, सुथनी माटिक तरक आ माटिक ऊपरक पसरल खीरा, सजमैन, नारिकेल, केरा इत्यादि, तहिना धरतीसँ अकास धरिक सजल आगन्तु कुशियारक संग भुसवा-ठकुआ पँचमुखी दीपक आगू। मुदा छठिक सौंझुका अर्घ्य जकाँ ठकुआक गहुमक संग तेलक सेरसोकेँ तँ जेबाक सेहो छइहे। तेतबे किए औंकरैत औंकरी सेहो ऊपरेसँ अपन बलिदान करैले तनफनाइते अछि। कुशियारो कौल्हमे पेराइले तैयारे अछि। जँ से नै रहत तँ मिसरी केना बनत। असगरे भुसवा बुदबुदाएल मुदा कियो ने कान देलक आ ने बेथा बुझलक। फेर ठोर पटपटबैत भुसवाक मुहसँ निकलल-

“कहू! जे आगूक जनमल ठकुआ छी, तखन केहेन कड़ुआएल बात बजैए जे जहिना सभ दिन गुड़कैत रहलेँ तहिना गुड़कैत रहमेँ। हमरा जकाँ तोरा आसन-बासन हेतौ।”

बुदबुदाइक वेगमे भुसवा बुदबुदा तँ गेल मुदा लगले मन घुमलै। घुमिते उठलै, मनोक तँ यएह ने चालि छै, जखन खुशी रहैए तखन नचबो करैए, गेबो करैए। नाचियो-नाचि आ गाबियो-गाबि दुनियोँकेँ देखबैए आ दुनियोँकेँ देखैए। मुदा वएह मन जखन कोनो बाएबे दुबराए लगै छै तखन अपनो दुबराइत रहैए आ दोसरोकेँ दुबरैबते छइ। भरिसक तहिना ठकुआकेँ भऽ गेलइ। आकि धन-बुबकी पकैड़ लेलकै। मुदा जहिना बिनु गाड़लो बाँसक खुट्टाकेँ जँ दुनू भाग डोर पकैड़ खींचल जाइ छै तखन असथिरसँ ठाढ़ भऽ जाइ छै...।

असथिर होइत भुसवा अपन पुरखा दिस तकलक तँ बुझि पड़लै जे हुनकर सिरजनमे केतौ भेद-कुभेद नै भेल छैन। पृथ्वी जकाँ गोल-मोल बना गुड़काउ बनौने छैथ किए केकरो ऊपर अपन पसरल भार देब, तँए कि ओकरा सँ कम भारी छी। नै दौड़ कऽ चलल हएत मुदा नहियोँ तँ नहियेँ चलल हएत। नै डेगे-डेग मुदा गुड़कुनियाँ कटैत नै चलल हएत से

केकरो कहने थोड़े हेतै, एते तँ अपनो अपन परिचए अछिए। जखन बिनु पएरे ठाढ़ होइते छी, गुड़कैत चैलते छी तखन किए केकरो आँखि गुरेड़ब आँखि दबि दाबि लेब।

मनक उष्मा जगलै। आगू तकलक तँ केतौ किछु ने नजैर पड़लै। जखन कि फूल-पात, तीमन-तरकारीसँ लऽ कऽ फल-फलहरी धरिसँ सजल डाली अछि। होइतो अहिना छै जे हजारो-लाखोक भीड़मे जहिना प्रेमी अपन प्रेमिका छोड़ि किछु ने देखैए तहिना भुसवाकेँ ठकुआ छोड़ि किछु ने नजैरपर एलइ। खसल आँखि जहिना उठि कऽ आगू देखए चाहैए तहिना भुसवोक नजैर उठल। उठिते हिया कऽ ठकुआ दिस तकलक।

तकिते देखलक जे जहिना नजैर दाबि ठकुआ बाजल छल तहिना किछु अगों बाजए चाहैए। जखन अगों बजैले मन लुसफुसाइते छै तखन किए ने कनीकाल बिलैम देखे लिऐ जे की बजैए। जेहेन मुँह तेहेन बोल, आकि जेहेन मुँह तेहेन थापर, दुनूक बीच तँ समगम अछिए। जिज्ञासु नजैर भुसवा ठकुआ दिस नजरेलक।

अपना ताले बेहाल ठकुआ, जे बाल-बोध रही आकि चेतन जखने डालीक उत्सर्ग हएत तखने पहिल हाथ हमरे दिस ने बढ़त। ई प्रतिष्ठा केकरा छइ। कियो बाँटि लेत। तँए कियो हमर मुँहक बात छीन लेत। केहेन गबदी मारि भुसवा बजै छल, जेना बुझि पड़लै जे कियो सुनबे ने केलक। जेकर असार-पसार एते छै तेकर कान हाथी जकाँ नै तँ बिज्जी जकाँ हेतइ।

जेना-जेना ठकुआक मनमे भुसवा गुड़कैत रहै तेना-तेना ठकुआक रीश बढ़ल जाइ। रीशसँ रीशिया ठकुआ बाजल-

“केतबो बानर जकाँ नाँगैर पटैक कऽ रहि गेलेँ कहाँ एको धूर जमीन-जत्था अपनो पएर रोपैले भेलौं, जहिना बाप-दादा गुड़कैत एलौ

तहिना गुड़कैत रहमैं।”

ठकुआक बात सुनि भुसवा मने-मन कोशाएल, बाजल किछु ने। मनमे उठलै, क्रोधमे किछु बाजब आकि करब, दुनू अनुचित हएत। मुदा लगले फेर भेलै जे एकर माने ई नै ने जे ने किछु बाजी आ ने किछु करी। फेर भेलै जे अखन तामसमे छी अखन ने किछु बाजब आ ने करब। जखन मन असथिर हएत तखन ठकुआक विदाइक विचार करब। लगले मनमे उठलै, कहू जे केहेन हरामी अछि जे जेते गुरुत्व हमरा अछि तेकर अदहो हेतै कि नै हेतइ। मुदा हाथीक सिकड़ी डोलैबते अछि। आब कि कोनो ओ जुग-जमाना रहल जे पौआही भुसवा आ पौआही ठकुआ लोक बनौत। आब तँ ग्रामक हिसाबसँ लोक बनबैए। मुदा ई बुझबे ने करैए जे रोट रोटी कहि देने रोट रोटी भऽ जाइ छै, रोटक अपन सभ किछु छै ओहिना नै ने घड़ी पाबैनक परसाद छी। तेतबे किए, सबा सेर चिक्कसक ओहन भोज्य भक्ष बनौल जाइए जे पाबैनक पाबन छी।

फेर मन बदललै। बदैलते उठलै, जहिना पृथ्वी गोल तहिना सूर्य-चान गोल, तही देख कऽ ने विधाता हमरो गढ़ि गुड़का धरती दिस धकेल देलैन। अनेरे ठकुआक बातकेँ बतंगर बना मनकेँ ओझरौने छी। मुदा जहिना ठकुआ हमरा आँखि देखबैए तहिना तँ अनको देखौतै, एका-एकी आकि एकेबेर देखा तँ सभकेँ सकैए। मुदा से देखेबो केना करत, जेते जगह ठकुआ पकड़ने अछि तइसँ बेसी माइटो तरक छी तैयो अरूआ तँ पकड़नहि अछि। तहिना सजमैनो आकि नारिकेलो कम छेकने अछि। मुदा अपनो दादा तँ धरतीसँ अकास धरि पकड़नहि अछि, तँए अपन बेथा अपने घर किए ने राखब जे अनेरे चौगामा बान्हब। चाउरक संगी विधाता गुड़केँ मिला पठौलखिन तहिना ने ठकुओकेँ गहुमक चिक्कसक संग गुड़ो आ चिकनइकेँ सेहो मिला देलखिन। ऐमे ठकुआक अपन गलती नै विधाताक चाकक दोख भेल। तइले अनेरे किए मन मर्दन करब। मुदा चुपचाप सहियो लेब नीक हएत? सहबो तँ लोक ओइ पाबैनमे करैए जइमे

फल-फलहरी पबैए। तखन?

तखन यएह नीक जे डालीक सभकेँ अनेरे किए बुझारतमे बरदेबै, अपन वंशक कुशियार भेला, किए ने ओहए ठकुओकेँ आ हमरो बुझा-सुझा कऽ मेल-मिलान करा देता। कोनो एक दिनक नै ने छी, जे झगड़ा करि कऽ चाहे तँ गामे छोड़ि देब आकि गामे छोड़ा देबइ। तइसँ तँ पाबैनेक नोकसान हएत। साले-साल संग मिलि रहैक अछि, जखन केकरो कमाएल कियो ने खाइए तखन किए केकरो कियो आँखि बरदास करत। किए ने अपना आँखिये अपन रस्ता देखैत डेग उठौत। नीक सएह हएत, कुशियारो दादा की कम बुझनुक छैथ, हुनका कि नै बुझल छैन जे केना नेना-भुटकाक स्कूलमे, आ तिला संक्रान्तिमे चाउरक संग बँटेला। जखन पिसाएलो ने छेलौं, तहियेसँ संगी छैथ। आब तँ सहजे तेना मिलि गेल छैथ जे विलगाएबो कठिन अछि। फेर ललका चीनी बनैत, गुड़क सुआद कम करैत उजरा चीनी बनि, रंग-रंगक मिठाइ बनैत मिसरी गोला बनि देवालय पहुँच गेला, आब तँ सहजे जुग बदलल, जमाना बदलल, जइसँ वेचारा मिसरियो गोलासँ टुटि मोटका चीनी-दाना जकाँ सुपारी-टुक भऽ पान-फूल भऽ गेला। मुदा तँए कि छठि-परमेशरीक घाटपर ओधिक सिर सहित फुनगीक गोभ धरि धाट नै धड़ै छैथ? धड़िते छैथ। अखनो गंगा-घाटमे साइयो बोझ कुशियार तँ छठिक घाट छेकते अछि। ई दीगर भेल जे गुड़ बनि जखन ठकुआक संग रहए लगला तखन फेँट-फाँट शुरू भऽ गेल। कियो गुड़ घाउ दुआरे गुड़ छोड़लैन तँ कियो डोमीन कहि-कहि छोड़ि उजरा चीनीसँ चिनराबए लगला। मुदा तँए कि मिसरीक उसरन भऽ गेल? भलेँ कतरा सुपारी जकाँ किए ने बनि गेल होथु।

छठि पाबैनक प्रेमी मनमोहन कौलेजक छुट्टी पेब गाम आएल। ओना, गाम ई अजमा कऽ आएल जे नीक जकाँ छठिक सौंझुका-भोरूका अर्घ्य दानक दर्शन करब। धड़फड़ीमे एक दिन पहिने आबि खरना दिनक रबाइस-फटाकाक अवाज सुनि मन बहैम गेलइ। मुदा दिल्लीक लड्डू जकाँ

ने छोड़ने बनत आ ने खेने बनत। जेते पोखैर-झाँखैर चिक्कन करै छी तइसँ बेसी हवामे भोक्कन सेहो करिते छी।

छठिक अर्घ्य उठैसँ घन्टा भरि पहिने मनमोहन घाटपर उपस्थिति दर्ज करबैले तैयार भऽ दरबज्जापर बैसल। रबाइस-फटाकाक अवाजसँ मन दलमलित भऽ गेलै, आँखि बन्न कऽ साहोर-साहोर करए लगल।

लोको तँ लोके छी एकटा बीत भरिक ठण्का डरे तँ गाम-गाम लोक साहोर-साहोर करैए आ जैठाम ठण्केक बाढ़ि आबि रहल छै तैठाम जँ ओछाइन धएल बुढ़-बुढ़ानुस पाबैन बिगाड़िये देता तँ तइमे हुनकर कोन दोख। मुदा तैयो गारि-फज्झैत तँ सुनबे करता जे ढंश कऽ देलक। ओही अवाजमे मनमोहन अकानए लगल जे अखन तक कोनो घाटक ढोलक ई कहाँ कहै छै जे 'ठकर-ठकर ठकुआ द दे।' ओ तँ अर्घ्य दानसँ पहर भरि पहिने अवाज दिअ लगै छल। ओह! भरिसक अखन देरी अछि।

मने-मन विचारिते रहए कि अंग्रेजी बाजाक अवाज एकटा घाट दिससँ उठल। ओना, जेबीए-जेबी मोबाइलोक उठिते छल। ढोलियाक केतौ दरस नै पाबि मन आगू बढ़लै, बढ़िते उठलै छठि-सतमीक सुर्जक अर्घ्य।

आइ डुमैत सुर्जक अर्घ्य दान हएत आ काल्हि उगैत सुर्जक। मुदा की सतमीए सुर्जक अर्घ्य छठिक साँझमे पड़ल आकि एक दिन पहिलुका?

छठि-सतमीक बीचक बोनमे मनमोहनक मन उमड़ए-घुमड़ए लगल। उमड़ैत-घुमड़ैत एकटा गाछ तर पहुँचते देखलक जे अदौसँ मिथिलाक चलैन रहल जे दरबज्जापर आएल पाहुनकैं अबिते आ जाइतो मधुर मुस्कानसँ काजक महिमाक संग नमस्कार-पाती होइत आबि रहल अछि। जनमो सोहर मरनो सोहर। मुदा पहिने एबाकाल अबैक सोहर होइ छै पछाइत जेबाकालक। तैसंग ईहो तँ ऐछे जे छैठैक सतमी होइ छइ।

भूते-वीर्तमान आ वर्तमाने भविस।

विचारमे डुमल मनमोहनक भक्क तखन खुजल जखन घाटसँ घुमल डाली आँगन पहुँच गेल। सेहो कि ओहिना खुजलै? नै! जखन अँगनाक धिया-पुता ठकुआ-केरा-ले काँइ-किच्चैर करए लगल। भक्क टुटिते हरेलहा लोक जकाँ मनमोहन उठि कऽ लगले आँगन दिस जाए तँ लगले दरबज्जापर आबए, बाजए किछु ने। अपन हारल के बजैए जे मनमोहन बाजत। मुदा मनमे कचोट तँ उठिते रहै जे केतए एलौं तँ केतौ ने। मुइला पछाइत जहिना लोक बुझैए। से जहियेसँ ज्ञान-परान भेल तहियेसँ मनमे छल जे छठि-परमेशरीक घाटक अर्घ्यक दर्शन करब।

फेर मनमे भेलै जे दुनू साँझक अर्घ्यक अपन-अपन महत आ महिमा छइ। कूर चढ़ल चौमुखी, पँचमुखी दीपक रोशनीक रोसनाइ जेहेन छठिक घाटक हएत तेहेन सतमी-घाटक थोड़े हएत। कियो भरि दिन हेराएल साँझमे पहुँच गृह विश्राम करैए तँ कियो भरि राति हेरा भोरमे पहुँच गृह विश्राम करैए। भेल तँ एके स्वर, एकटा भेल भरि राति आ एकटा भेल भरि दिन। तैसंग पहुँचबो एके भेल, मुदा भेल संधि-स्थलपर। हारि-जीतक बीच संधियो तँ दोहरी ऐछे, एकटा अछि भिनसुरका आ दोसर अछि सौंझुका।

ओना, भलें किछु काज भिनसुरकामे वरजित अछि तँ किछु सौंझुकोमे तँ अछिए। तँए एकनाम संधिभूमि रहितो दुनू एक्के रंग घटकेँ घटवार बना घाट थोड़े पार करत। एकटा असीम इजोत तँ दोसर असीम अन्हार...।

अन्हार-इजोतक बीच अबिते मनमोहनक मन हटैक गेल। ने आगू डेग उठै आने पाछू। एक दिस अकास ठेकल पहाड़ तँ दोसर दिस पताल टुटल समुद्रमे वौअए लगल।

मुदा मनुखो तँ मनुखे छी जेहने ओकरा-ले पहाड़ तेहने पहाड़ो आ

पहाड़क किनछैक बोनो। तहिना समतल भूइमो आ डोहो-डावरक संग पोखैरो-झील, सरोवर, नाला, नाली, मुइल-जीत धार-धुरक संग पताल टुटल समुद्रो!

मनमोहनक मन ठमैक गेल। ठमैकते मन ठनकलै। ठनकलै ई जे औझुका नीक-बेजए केलहा काजो तँ भुताइए जाएत, मुदा जाइके तँ अछि काल्हि दिस। फेर मन भोथियेलै। भोथियेलै ई जे हमहींटा एहेन भोथियेनिहार छी कि आरो लोक अछि? ओना, केकरो अपन दिन-रातिक काज-भार थोपल छै मुदा भोथियेलहोक बोन तँ छोट-छीन नहियेँ अछि। भोथियाएबो कि एक्के रंगक अछि। एक रंगक रहैत तँ मौसमक अनुकूल ओ उपैटो सकै छल माने ई जे अपना ऐठामक मालदह आम साइवेरियामे थोड़े हएत, मुदा एकर माने ई नै ने जे साइवेरियाबलाकेँ आम सन फल नै भेटैत होइ।

मनमोहनक मन फेर भटकल। भटकलेपर ने कियो हेराइतो आ भोथियाइतो अछि। फेर भेलै जे अनेरे दुनियाँ दिस तकै छी। अपन घर इजोते ने, आनक इजोत करब। ई बात जरूर जे बोनमे हमरा सन बहुत भोथियाएल हेराएल अछि, जखने डेग उठाएब आकि भोथियेलहा भेटए लगत। अनेरे तँ दुनू गोरे संगी हएब। जखने संगी हएब तखने दू-दूटा हाथ-पएर, आँखि, कान, नाक भेटत। मुँह ने एकेटा भेटत, तइले की हेतै, बेरा-बेरी दुनू गोरे बाजब। बेरा-बेरीक माने ई थोड़े हएत जे ओ किछु बाजत आ अपने किछु बाजब। कोनो चीजकेँ ओकरो आँखि देखतै, कान सुनतै आ अपनो तँ देखबे-सुनबे करब। ओकरे जड़ि पकैड़ दुनू गोरे गप-सप्प करब। जखने दुनू गोरे अपन-अपन विचार व्यक्त करब तखने ने दुनू गोरेमे मेदहा भऽ जाएत।

मनमोहनक मन फेर ठमकलै। ठमकलै ई जे एक गोरे ओहेन होइए जे काजक भीरे ने जाइए, मुदा अपना तँ से नै भेल। कौलेजमे अही निविते छुट्टी भेल, हमरेटा-ले नइ, सभले भेल। मुदा भेटलै तँ ओकरेटा जे

छठि-परमेशरीक सौंझुका अर्घ्यक दर्शन केलक। मुदा हम तँ निआरिते रहि गेलौं, देख नै पेलौं। आखिर एना भेल किए? उपासककेँ अपन उपासक संग संकल्पो करए पड़ै छइ। संकल्पे व्रती बनबै छै, जइसँ व्रत उपास करैए। हम तँ ओहन हेरेनिहार भऽ गेलौं जे जखन हाथमे घड़ी, मोबाइलमे घड़ी, रेडियोमे घड़ी, टाबरक ऊपर घड़ी छल मुदा तखनो समय ससैर गेल आ बुझि नै पेलौं! किछु हएत तँ दीयाक ज्योति जे सौंझुका घाटकेँ ज्योतिर्मय करत ओ भिनसुरका थोड़े करत! करबो केना करत? कोनो वस्तुक आनन्द ओकरा बेसी भेटै छै जेकरा अभाव छइ। मुदा हूसल-बीतल कालपर बेसी अपसोचो करब आकि कानबो-खिजबो करब सेहो तँ बेसी नीक नहियेँ हएत, मुदा घड़ी-पहर देख कऽ घाटपर पहुँचब अछि, जँ आनक आशा-बाट देखए लगब तँ अपनो आशक-बाट भटैक जाएत।

हारि-थाकि मनमोहन अन्तिम विचार कऽ लेलक जे नियत समयपर घाटपर पहुँचब अछि, ओना- जे पहिने गेनिहार रहत ओ तँ रहबे करत, पछुएलहा ने पाछू जाएत मुदा अपने उजगुजेलहा जकाँ पहिने नै पहुँचल रहब तँ तइसँ की हेतै, समयपर पहुँचला जकाँ सभ कथुक दर्शन तँ हेबे करत।

सुतैबेर रातिमे जखन मनमोहन सिरमापर मुड़ी रखलक आकि भुक दऽ भोरका काज मनमे उचड़लै। उचैड़ते ठेकनबए लगल जे तीन बजे भोरमे घाटपर पहुँचब अछि। जाबे पहुँचब नै ताबे कौलेजसँ एलहाक फल की भेटत। मुदा तीन बजेमे नीन टुटत? ओ तँ असली सुतै बेर छी! ओहीकालमे ने वसन्ती राग चलै छै, विराग चलै छै, अनुराग चलै छै, चिराग चलै छै, नै जानि आरो की सभ चलै छइ।

फेर मन ठमकलै। ठमकलै ई जे अनेरे अखन मन-मर्दन करब तँ मने उजगुजा जाएत जइसँ नीने ने औत, जँ कनी-मनी भको लगत तँ चहाएल मन चहा-चहा उठत। जखने से भेल तखने आँखि कड़ुआ

जाएत, भोरमे जे घाटपर पहुँचबो करब तँ यएह ने हएत जे कड़ुआएल नजैर नजरा करिया सियाही पकड़ा देत। ओह! तइसँ नीक जे मन मारि अखन आँखि मूनि ली। अन्नक निशाँ चढ़बे करत, नीन एबे करत। मुदा अधनीनाकेँ कहि देबै जे भाय, तीन बजे घाटपर जाइक अछि, कनीकाल अङ्गोसो-मङ्गोसोमे लगत, तँए अढ़ाइ बजे तूँ हटि जइहह। जान छोड़ि दीहऽ। कौलेजसँ छुट्टी अही दुआरे भेल अछि।

ओना, मनमोहन घड़ियोमे आ मोबाइलोमे एलार्म भरि देलक, मुदा अढ़ाइ बजेमे जखन घड़ियो आ मोबाइलोमे घड़ी-मिनट बाँकीए रहै आकि नीनियाँ देवी अपने ससैर गेलखिन। ससैरते घड़ियो बाजल आ मोबाइलो बाजल। एक तँ मनक घड़ी-घण्ट दोसर घड़ीक घोल आ तेसर मोबाइलिक घोल। मनसँ मशीन तक अनघोल कऽ उठल। समय पेब मनमोहन फुरफुरा कऽ उठल। काजक रूटिंग दिस तकलक तँ बुझि पड़लै जे नीन हटला पछाइत पहिने लेटरीन जाइ छी, हाथमे ब्रश नेने जीह-दाँत मजैत चारि डेग टहैल अबै छी, तखन कुर्ड़ा-आचमन कऽ लोटा भरि पानि पीबै छी, चाह पीबै छी, पान खाइ छी, तखन ने कोनो काज दिस तकै छी। मुदा आइ तँ काज दिस ताकब नै, दर्शन करब अछि। तँए रूटिंग बदलब जरूरी अछि, दरसनियाँ घाटपर बिना मुँह धोने केना जाएब। लेटरीन समयमे चारि घन्टा देरियो अछिए। सहए केलक।

चारि मज्जन कऽ मुँह-हाथ धोइ कऽ असगरे घाट दिस मनमोहन विदा भेल।

दरबज्जासँ उतैरते कानमे ढोलक अवाज एलइ। ढोल छी आकि ढोलक? जँ ढोल हएत तँ छठिक घाटक हएत नै जँ ढोलकक हएत तँ केतौ नाच-तमाशाक हएत। ओना, छैठोक घाटपर नाच-तमाशा होइते अछि। जे दरसनियाँ छल से देखनियाँ भऽ गेल। मुदा जेतए जे भेल से हौउ, अनेरे मनकेँ मरूअबै छी।

कानक पाछू हाथ रखि मनमोहन देव स्थानक अवाज अकानलक तँ बुझि पड़लै जे ढोलेक अवाज छी। एक लय एक सूर, अष्टयामक राम-धुन जकाँ अछि। 'ठकर-ठकर ठकुआ दे।' ठकुआ मगैए पुड़ी नहि। तहूमे पुड़ी तँ आरो गजपट भऽ गेल अछि, केतौ चीनियाँ पुड़ी, तँ केतौ गुड़िया पुड़ी, तँ केतौ दलिया संग नोनपुरिया बनि गेल अछि, मुदा ठकुआ अखनो अनोना रवि जकाँ नोनसँ परहेज केने अछि। ओ ठकुआ। वएह-वएह पौआही, जे झँप्पासँ नापल रहैए।

मनमोहनक मन मानि गेलै जे घाटक ढोल बाजि रहल अछि। तखने बड़का रबासिक अवाज उठलै। एक-घाट, दू-घाट, पोखैरक चौबगली घाट परहक दूषित घुआँ गाम भरिमे अपन महक पसारि रहल छल। छठिक डाली पसरल परसादक सुगंध नै, बारूदक गंध। मनमोहनक मनमे रमल नहि। रमबो केना करैत, जखन एक रसक रसिक रसिया रास करत तँ ओ वृन्दावन छोड़ि जाएत केतए? जेतए वृन्दावनेश्वरी छोड़ि दोसरक बास नै होइ।

घाटपर पहुँचते मनमोहन महारसँ ससैर पानिक किनछैरमे डाला-डाली सजल देख सहैट गेल। चौमुखी-पँचमुखी दीया-कूरपर अनहरिया परखक तिरोदसीक चान सन मलिन होइत दीयाकेँ देख अपनो मलिन हुअ लगल। सुपती-कोनियाँ बदैल, पित्तैरबला कोनियाँ घाट पकैड़ रहल अछि, भलेँ अगहनक धानसँ भेँट हुअए कि नै मुदा सूप-कोनियाँ तँ नीक भइये गेल अछि, जइसँ जिनगी भरि चलैक आशा तँ अछिए। हाथियो जेना हहैर गेल। ओ तँ राजा-रजबारकेँ हहरने भरिसक हहरल। मुदा केराक घौर आ कुशियारक मन, मुस्की मारिये रहल अछि। केना ने मुस्की मारत, जहियासँ छठि आएल तहियाक संगी दुनू अपन साम्राज्य सेहो भकराड़ बनौनहि अछि, तँए दुनूक मन खुशी। जे केरा एक-एक छीमी कऽ कुरबा-कोशियामे परसाएल रहै छल से अपन साम्राज्य बढ़ा छीमीक संग सौंसे घौरे पकैड़ लेलक।

तहिना कुशियारो अपन गृहवासू जकाँ टोनीक संग अपनो अकास पकड़ने ठाढ़ अछि। तैसंग गुड़ बनि भुसवा-ठकुआ पकैड़ चीनीक खाजा, लड्डू धरि पकड़नहि अछि तँए खुशी अछिए। भुसवापर नजैर पड़िते देखलक जे रूष्ट भेल भुसवा चुपचाप एकवाहि भेल गुड़कि कऽ कतवाहि धेने अछि। मुदा मन तम-तमाइते छइ। ओना, कुशियारकेँ पञ्च मानि ठकुआपर पनचैती बैसेबे करत।

एक टकसँ मनमोहन भुसवाकेँ देख औंकरी सभ दिस नजैर बढ़ौलक तँ बुझि पड़लै जे अपने मोने सभ मगन अछि, कियो केकरोसँ लागि-भागि नै रखने अछि, सभ शरणागैक अवस्थामे पवनियाँ-मनकमना पुरबै पाछू लगल अछि, केकरा एते छुट्टी छै जे गामे-गाम पनचैती केने घुरत। एक दिस बेटीकेँ बापक सम्पैतमे हिस्सेदारी छै, तँ दोसर दिस सासुरक दहेज बाधित छइ! केना ओझरी छूटत। कियो पिता अपना बेटीकेँ जेते अधिक पढ़बै पाछू समय आ पाइ खरच करै छैथ तेते ओ नै बुझै छथिन जे दहेजो ओते बेसी दिअ पड़त। जइ जमाएकेँ पढ़ल-लिखल कन्या भेटल, तैसंग ओकातिक हिसाबसँ दान-दहेज भेटल, शुरूसँ अन्तिम समय-बिआह धरि जेकर सेवा पाछू माता-पिता अपन शक्ति लगौलैन तइ बेटी-जमाए-सँ माता-पिताकेँ की भेटलैन?

लगले मनमोहनक मन हटकल। हटैकते भुसवापर नजैर गड़ौलक। वेचारा किए रूष्ट अछि?

सूपमे राखल सीम जकाँ नै, गोलका भाँटिन जकाँ भुसवा गुड़ैक कऽ सूप-कोनियाँमे कोणसँ कनखियाइत डालीमे रखल कुशियारक टोनीकेँ पकड़लक। पकैड़ते बाजल-

“भाय, तोरे खनदानक हमहूँ छी आ ठकुओ अछि... ।”

बिच्चेमे कुशियारक टोनी समर्थन दैत बाजल-

“एकरा के काटत, सभकेँ बुझल छइ।”

कुशियारक सह पाबि भुसवाक मनमे जगल, नीक संगी भेटल। अपन नचारी सुनबैत भुसवा कुशियारक टोनीकेँ कहलक-

"भाय, अपनैती बात छी, बदना हाल बदनियाँ जानए आ बदनियाँ हाल बदना जानए।"

फेर सह दैत कुशियार बाजल-

"तेहेन समय-साल भऽ गेल अछि जे अपनामे मीलि कऽ नै रहब तँ दोसर भगाइए देत।"

कुशियारक तोष-तुष्टि देख भुसवाक सम्बन्ध आरो बढ़ल। प्रेमी प्रेमिकाक पहिने जहिना मनक टोबनियाँ करैत, तहिना आसे-आसे मन घुसकबैत भुसवा बाजल-

"भाय की कहबह, अपन मारि खाएल केकरा कहबै, आ जँ नै कहबै तँ मनक रोग छी, मनरोग भेल। जँ कहीं मृत्यु भेल तँ नरक छोड़ि सरग जा हएत?"

भुसवाक बातक भाँज कुशियार बुझबे ने केलक। बिनु बुझल-गमल बातक उत्तर देब अनुचित छी। मुदा ईहो जँ खोलि कऽ बाजब जे भाय, तोहर बात नीक नहाँति नै बुझलियह, कनी नीक जकाँ बुझा दैह। मुदा एते सुनै आ बुझैक पलखैत अछि, कनीकालमे घाट उसरत। सबहक अपन-अपन दुनियाँ छै, अपन-अपन संगी छइ। पान-सात बर्खक धिया-पुता भुसवा-ठकुआ पकड़त आकि नमहर देख कुशियारक टोनी पकड़त। मुदा बेरादरीक बात छी, केना मुँह फोड़ि कहबै जे तूँ कष्टमे पड़ल रहऽ। बाजल-

"भुसवा भाय, अहाँ कनै किए छी, बड़का भैया ठाढ़े छैथ, हुनका अखन कियो छुतैन, जखन डालीक सभ सधि जाएत तखन हुनकर भाँज औतैन। तँए हुनका बेसी पलखैतो छैन, चलू हुनकासँ भेँट करा हमहूँ अहाँ दिससँ समर्थन कऽ देब। ओ निवटा देता।"

भुसवाक मन दसअना-छअना हुअ लगलै। तेहेन समाजमे पड़ि गेल छी जे के केकर सुनत। सभ अपने बेथे बेथाएल अछि। मुदा तँए कि हमर हक-हिस्सा नै अछि। छठिमे ठकुआ भलेँ आँखि देखबए मुदा दुरगमनियाँ कनियाँक संग महिना-दू-महिना हमरा छोड़ि कऽ कियो थोड़े जीवि सकैए।

फेर मनमे भेलै जे अपनापर नै नितराइ। ई कि कोनो झूठ छिऐ जे आब दुरागमने ने अछि तँ तेकर साँठ-उसार कथी हएत। मनमे उठिते भुसवा ठकुआ गेल। ठकुआइते नजैर ठकुआपर पड़लै। मनमे खुशी भेलै, जे जेहने गति हमर भेल जाइए तेहने तँ ओकरो भेल जाइ छै, तखन रूआबे केते दिन चलतै। मुदा लगले मनमे उठलै, जहिना हम तहिना ठकुआ लोकक हाथक बनौल छी। विचार बदलतै, हाथ बदलतै, हाथक बौस बदलतै। मुदा हमरे सन गुणगर वेचारा शरीफा किए घाट छोड़ि देलक? छठिक घाटक डालीक तँ फल छी शरीफा?

भुसवाक मन शरीफाक दुर्दिनपर गेल। जँ छठिक घाटक फलक अधिकार केकरो छै तँ शरीफोकेँ छइ। जेठक तपल कलशक फूलक फल छी शरीफा। बच्चामे जे रौद तपल बरसातक झाँट-पानि सहल, शरद पबिते सरदिया अपन जुआनी निखारि रंग-रूप सुआद सभ किछुसँ भरि लेलक। ओ केतए चल गेल? की शरीफा सन फल धरोहर नै छी?

छठि-परमेशरीक कथा भेल। औंकरी छीटान भेल। बिसर्जनक छिट्टा सजल। सभ घरमुहाँ भेल।

❑ **साभार : गामक शकल-सूरत**

बपौती सम्पैत

आसिनक अन्हरिया चौठ। गोटि-पँगरा खाएन-पीन शुरू भऽ गेल। मातृनौमी-पितृपक्ष साझीए चलि रहल अछि। कियो-कियो बाप-दादा-परदादाक नाओंसँ तँ कियो-कियो माइयो-दादी-परदादी निमित्ते नोति-नोति खुअबैत। जल-तर्पण सेहो परीवे दिनसँ शुरू भऽ गेल। मुदा ईहो गोटि पँगरे। किछु गोरे ठेकिऔने जे एकादशी-के जल-तपर्ण कऽ लेब। तहिना मातृपक्ष-ले नौमी आ पितृपक्ष-ले एकादशी-के नोतहारी नोति खुआ लेब। मुदा गामक किछु जातिक बीच तेसरो तरहक होइत। ओ ई होइए जे बेरा-बेरी सभ सौंसे टोलकेँ एक-एक दिन खुअबैए। जेकरा ढढक कहैए आ किछु गोरे मातृपक्ष-ले महिलाकेँ आ पितृपक्ष-ले पुरुखकेँ नोत दऽ सेहो खुअबैए। पक्षक भिनौज भऽ गेल अछि। एकपक्ष 'मातृनौमी' आ दोसर 'पितृपक्ष'। नौमी मातृपक्षक हिस्सा आ एकादशी पितृपक्षक हिस्सा भऽ गेल अछि...।

दुनू टेंगारीकेँ घरसँ निकालि गुलटेन पच्चर लगा सिलौटपर पिजबैक विचार केलक कि तमाकुल खाइक मन भेलइ। चुनौटीसँ सकरी कट तमाकुल निकालि तरहत्थीपर डाँट बीछते छल कि पत्नी आबि कहलकै-

"घरमे एक्को चुटकी नून नै अछि, भनसा बेर भऽ गेल, करवन आनब?"

“अच्छा होउ, जाबे अहाँ सजमैन बनाएब ताबे हम दौगले नून नेने अबै छी। टेंगारी नेने जाउ कोठीक गोरा तरमे रखि देबइ।”

गुलटेन हाँइ-हाँइ तमाकुल चुनबए लगल। ठोरमे तमाकुल लइते, मरचूनक दुआरे केनादन लगलै कि थुकैड़ कऽ फेकैत दोकान दिस विदा भेल। एक तँ तमाकुल मनकेँ हौंड़ देलकै, दोसर काज पछुआइत देख गुलटेनक मन आरो घोर-घोर भऽ गेल। मनमे उठलै पुरने कपड़ा जकाँ परिवारो होइए। जहिना पुरना कपड़ाकेँ एकठामक फाट सीने दोसरठाम मसैक जाइ छै तहिना परिवारोक काजक अछि। एकटा पुराउ दोसर आबि जाएत। मुदा चिन्ता आगू-मुहेँ नै ससैर रूकि गेलइ। चिन्ताकेँ अँटैकते गुलटेनक मनमे खुशी भेलइ। अपनापर ग्लानि भेलै जे जइ धरतीपर बसल परिवारमे जन्म लेबाक सेहन्ता देवियो-देवताकेँ होइ छैन ओकरा हम माया-जाल किए बुझै छी? ई दुनियाँ केकरा-ले छइ? केकरो कहने दुनियाँ असत्य भऽ जाएत? ई दुनियाँ उपयोग करैक वस्तु छी नइ कि उपभोग करैक...। गुलटेनकेँ देख आमक गाछक छाँहमे बैसल भुखना बाजल-

“तमाकुल खा लएह काका, तखन जइहह।”

ठाढ़ भऽ गुलटेन भुखनाकेँ कहलक-

“बौआ, अगुताएल छी, जल्दी दू धूस्सा दहक आ लाबह। बेसी-काल नइ अँटकब।”

“एह काका! तोहूँ हरिदम अगुताएले रहै छह। तमाकुलो खाइक छुट्टी नइ रहै छह।”

कहि भुखना चून झाड़ि चुटकीसँ तमाकुल बढ़ौलक। मुँहमे तमाकुल लइते गुलटेनकेँ रसगर लगलै, सुआद पाबि बाजल-

“बड़ टिपगर खैनी खुऔलेँ भुखन! एहेन टिपगर माल! कोन दोकानक छियौ?”

"काका की कहबह; दिन आठम एकटा समस्तीपुरक वेपारी साइकिलपर एक बोझ नेने बेचए आएल रहए। रातिमे अपने ऐठीम रहल। एह! भरि राति ओ वेपारी एक हिसाबे जगौनहि रहल। जेहने खिस्सक्कर तेहने महरैया। खाइसँ पहिने महराइ गौलक आ खेला पछाइत एक्केटा तेहेन खिस्सा–रजनी-सजनीक–उठौलक जे ओरेबे ने करइ। जखन डंडी-तराजू पच्छिम चलि गेल तखन हमहीं कहलिऐ- 'आब छोड़ि दियौ, बड़ राति भऽ गेल।' तखन जा कऽ छोड़लक।

भिनसर भने पोखैर-झाँखैर दिससँ आएल तँ चाह पिआ देलिऐ। दलानपर सँ साइकिल निकालि तमाकुल सेरियाबए लगल। हमहूँ गिलास धोइ चक्कापर रखि एलौं, जेबीसँ दस टकही निकालि दिअ लगल। कहलिऐ- 'ई की दइ छी?' ओ कहलक- 'हम वेपारी छी कोनो अभियागत नहि। तँए खेनाइक पाइ दइ छी।' आब तोंही कहह काका, ओकरासँ पाइ लेब उचित होइत? की हम सभ अपन बाप-दादाक बनौल प्रतिष्ठाकेँ भँसा देब? ई तँ बपौती सम्पैत छी किने। एकरा केना आँखिक सोझहामे मेटाइत देखब।"

थूक फेक गुलटेन बाजल-

"एहनो कियो बुड़िबक्की करए। पाभैर खेने हएत कि नइ खेने हएत, तइले लोक अपन खानदानक नाक कटा लेत। नीक केलह जे पाइ नै छूलह।"

अपन बड़प्पन देख मुस्की दैत भुखना बाजल-

"ऐँह की कहिय काका! ओहो बड़ रगड़ी रहए, कहए लगल- 'से केना हएत। हम कि कोनो भूखल-दूखल छी कि वेपारी छी।' मुदा हमहूँ पाइ नै छुलिऐ। तखन ओ दस-बारहटा पात निकालि कऽ दैत कहलक- 'जहिना अहाँक अन्न खेलौं तहिना हमहूँ तमाकुल खाइए-ले दइ छी।' सएह छी।"

आगू बढ़ैत गुलटेन बाजल-

“बौआ, अखन औगुताएल छी। नूनक दुआरे तीमन अनोने रहि जाएत।”

थोड़बे हटि कऽ घोघन साहुक दोकान। दोकानपर गेल। गुलटेनकेँ देखते झिंगुर काका कहलखिन-

“अखन धरि माथमे केश लगले देखै छिअ!”

माथ हसोंथि कऽ देखैत गुलटेन बाजल-

“अखन कटबै-जोकर कहाँ भेल हेन! जखन कानपर केश लटकए लगत तखन ने कटाएब।”

“बिसैर गेलह! काल्हिए ने बाबूक बरखी छिअ। हमरो चच्चा साहैबकेँ छिऐन। दुनू गोरे एक्के दिन ने मरल रहैथ।”

झिंगुर-कक्काक बात सुनि गुलटेनकेँ धक्-दे मन पड़ल। बाजल-

“हँ, ठीके कहलौं काका। आइ जँ अहाँ भेँट नै होइतौं तँ बरखी छुटिये जाइत।”

“अखनो किछु नइ भेल हेन। जा कऽ कटा आबह। हमर तँ तेहेन झमटगर दियाद अछि जे भोरेसँ चारि गोरे लागल अछि मुदा अखनो धरि पार नै लगल हेन।”

“अखन तँ हमहीं टा घरपर छी। दियादिक तँ सभ कियो अपन-अपन हाल-रोजगारमे चलि गेल। कियो झंझारपुर वेपारीक संग गछकटियामे तँ कियो सुखेतक चिमनीपर ईंटा बनबैमे। अपने केश कटाएब कि ओरियान बात करब आकि ओकरा सभकेँ बजबैले जाएब...।”

“असली कर्त्ता तँ तोहीं ने छहक। तोहर कटाएब जरूरी छह। हमरा सभमे तँ पाँच बरखी धरि सभ दियाद-वाद केशो कटबैत अछि आ कम-

सँ-कम एगारह गोरेकेँ खाइयोले दैत अछि। तोरा एकटा आरो हेतह। खाएन-पीन माने मातृनौमी-पितृपक्ष चलिते अछि। चाचाजी केँ तीर्थेपर बरखी पड़ि गेलैन, तँए दोहरा कऽ खुअबैक झंझटे नइ रहलैन। मुदा तूँ सभ तँ एकादशीकेँ खुअबै छहक तँए तोरा दोहरा कऽ सेहो करए पड़तह। ओना, ई सभ मन मानैक बात छी मुदा चलैनो तँ अपन महत रखैए किने।"

झिंगुर-कक्काक बात सुनि गुलटेन दोकानदारकेँ कहलक-

"हे हौ घोघन साहु, झब-दे एक टकाक नून दएह।"

गमछामे नून बान्हि गुलटेन लफड़ल घर दिस विदा भेल। मनमे पिता नाचए लगलखिन। हृदए पसीझ गेलइ। मन पड़लै, बाबू अनका जकाँ नै छला। आगू-पाछूक बात जनै छला। जँ से नहि, तँ किएक ने अनके जकाँ हमरो खेत-पथार कीनि देने रहितैथ। कोनो कि कमाइ-खटाइ नै छला। जँ से नै छला तँ कातिक मासमे ओते खरचा करि कऽ भागवत केना करबै छला। तैपर सँ भोजो-भनडारा करिते छला। हमरे-ले की कम केलैन? घर-गिरहस्तीक सभ लूरि सिखा देलैन। बारहो मासक काज। हम कि कोनो नोकरी करै छी जे सालो भरि कहियो बैसारी नइ होइत अछि। कमाइ छी, खाइ छी, ठाठसँ जिनगी बितबै छी! जँ खेते रहैत आ खेती करैक लूरिए नइ रहैत, तँ छुच्छे खेते लऽ कऽ की करितौं। गाममे देखबे करै छी खेतबला सबहक दशा। रौदी हुअए कि दाही, अछैते खेते हाट-बजारसँ मोटा उघै छैथ। हमरा तँ घराड़ी छोड़ि एक्को धूर नै अछि। तँए कि केकरोसँ अधला जीबै छी...। अपन खुशहाल जिनगीपर नजैर अबिते गुलटेनक हृदय आनन्दसँ ओलैड़ गेल। मरहन्ना धान जकाँ लटुआएल नहि, अपन चढ़ल जुआनी जकाँ खेतक आड़िपर ओलड़ल। मनमे उठलै- केना लोक बजैए जे जेकरा अ आ नै लिखए अबै छै ओ 'मुरुख' अछि? बाबू तँ औंठे-निशान दऽ कोटासँ मटियो तेल आ चिन्नियोँ अनै छला। बड़का-बड़का सर्टिफिकेटोबला सभकेँ देखै छिऐन जे दारू

पीब लेता आ बीच सड़कपर ठाढ़ भऽ अंगरेजीमे भाषण करैत लोकक रस्ता रोकने रहै छैथ! तइमे हजार गुना नीक ने बाबू छला। खाइ बेरमे आँगनमे नइ रहै छेलौं तँ शोर पाड़ि संगे खुअबै छला। जहिया कहियो नीक-निकुत अनै छला आ थारीमे अन्दाजसँ बेसी बुझि पड़ै छेलैन तँ थारीसँ निकालि माएकेँ दइ छेलखिन नइ तँ ओते छोड़ि कऽ उठै छला। आ-हा-हा! एहेन बाप होएब की अधला छी। जखन काज करए जाइ छला तँ संगे नेने जाइ छला आ काजक लूरि सिखबै छला। काजक लूरि भेल तहन ने बोइन करए लगलौं। हुनकर सालो भरिक हिसाब केहेन छेलैन। आसिन-कातिक गछपंगियाँ आ खढ़कटिया हुनकेसँ सीखलौं। तहिना अगहन-पूस धनकटिया, नारबन्हिया, दाउन केनाइ, टाल लगौनाइ सीखने छी। किए एक्को दिन बैसारी रहत। अखनुका छौंड़ा सभ जकाँ नइ ने जे कहत काजे ने अछि। रस्तापर बाउल उड़ाएब आकि पानि डेंगाएब। मुरूखो रहैत बाबूए ने सिखौलैन जे फागुनसँ जेठ धरि घरहटक समय होइ छइ। जेकरा घरहट करैक लूरि रहत वएह ने अपनो घर आ अनको घर बन्हैमे मदैत कऽ सकैए। जेकरा लूरिए ने रहतै ओकरा इन्दिरा आवासमे मुखिया, चिमनीबला, सिमटीबला नै ठकतै तँ कि जेकरा अपन घर बनबैक लूरि रहत, ओकरा ठकत..?

अपनापर गुलटेनकेँ भरोस होइते मनमे खुशी उपकलै। मुहसँ हँसी निकललै। ओगरवाहिबला गाछीक मचकीपर नजैर गेलइ। की हमरा सबहक दुनियाँ अछि! बड़क गाछपर सँ बर्ड़ू काटि बरहा बनबै छी। मुठबाँसीक बल्ला, पिढ़िया आ कील बना गाछक डारिमे लटका झूलबो करै छी आ गेबो करै छी। जे चौमासा, छमासा, बारहमासा मचकीक स्टेजपर होइत अछि ओ बाजा-बूजी आ बैस कऽ गबैमे केना होएत..! असकरे कृष्ण-राधाक संग कदमक झूलापर चढ़ि नचबो करै छला, बौसरियो बजबै छला आ आसो लगबै छला। मुदा अखन तँ देखै छी जे बजा कियो बजबैए, नाच कियो करैए आ गीत कियो गबैए। तेहने ने

देखनिहारो अछि। कियो कैसियोबलाकेँ देखैए तँ कियो ठेकैताकेँ, कियो नचनिहारक नाच देखैए तँ कियो ओकर कानक झूमकाकेँ। गौनिहारक अवाज सुनैए कि ओकर मुँह देखैए..!

नूनक पोटरी पत्नीकेँ दैत गुलटेन बाजल-

"बाबूक बरखी काल्हिए छी। बिसैर गेल छेलौं। केश कटौने अबै छी। ताबे अहाँ बरखी-ले जे चाउर रखने छी, ओकरा निकालि रौदमे पसाइर दियौ। राहैड़ सेहो उलबए पड़त। बेरू-पहर तीमन-तरकारी आ मसल्ला हाटसँ लऽ आनब। दूध तँ आइए पौड़ल जाएत। ओना, अम्हौरपर सौंझुको दूध जनैम जाएत।"

पतिक बात सुनि मुनिया बजली-

"एहेन अहाँ बिसराह जे छी से सभ काज चौबीसमा घड़ीमे सम्हरत! ने कुटुमकेँ नोत देलौं आ ने बेटी-जमाएकेँ खबैर देलिऐन।"

"अच्छा सभ हेतइ। अनजान-सुनजान महाकल्याण। बाबू कोनो अधरमी रहैथ जे कोनो बाधा हएत। उगलाहा सभ देखबो करै छैथ आ पारो लगौता।"

कहि, गुलटेन केश कटबए विदा भेल। केश कटा बरखीक जानकारी आ सबजना नोत दऽ चोट्टे घुमि गेल।

काजमे गुलटेन जेहने होशगर, माने लूरिगर तेहने बिसराहो। ई सभ बुझैत। उजड़ल गाम केना बसत। दरिद्र गाम केना सुभ्यस्त बनत, ऐ कलाक प्रदर्शन गुलटेनक काज देखबैत। अनाड़ीकेँ काजक लूरि सिखाएब, हनपटाह गाए-महींस दूहब, डरबुक-सँ-डरबुक गाएकेँ बहाएब माने साँढ़ लग लऽ जा पाल खुआएब, घोरनोबला आ चुट्टियाहो गाछपर चढ़ि आम तोड़ब, झोंझगर बाँसमे पत्ता तोड़ब, सुरुंगवा शीशो पाँगब, सुआगर घर छाड़ब, सक्कत खेत जोतब, पनिगर खेतमे धान रोपब, सांङ्गिपर ढेंग उठाएब, दुखताहकेँ खाटपर उठा डॉक्टर ऐठाम लऽ जाएब,

फड़काह बच्छाकेँ पटैक नाथब, हर लगाएब इत्यादि काज समाजमे केकरो कऽ दइत। करबो केना ने करैत? एकरे तँ अपन बपौती सम्पैत बुझैए।

बरखी-भोजक चर्चा जनीजातिक माध्यमसँ सगरे गाम पसैर गेल। अपन दायित्व बुझि एका-एकी मरदो आ स्त्रीगणो गुलटेन ऐठाम आबए लगली। जहिना अनका ऐठाम काज भेने गुलटेनो बिनु कहनौं पहुँच जाइए तहिना समाजोक लोक आबए लगलैन...।

रवियापर नजैर पड़िते गुलटेन बाजल-

"रबी, तोरा ऐठाम तँ जाइए-ले छेलौं। भने आबिए गेलह। बहुत दिन जीबह।"

रविया-

"किए भैया? अखने फोकचाहावाली काकी आँगनमे बजली; तब बुझलौं।"

"ठीके बुझलहक। बिसैर गेल छेलौं। दोकानपर झिंगुर काका मन पाड़ि देलैन। मुदा काज तँ कल्हुका बदला परसू नइ हएत।"

"हमरा बुते जे हेतह तइमे पाछू थोड़े हेबह।"

"चाउर-दालि तँ घरेमे अछि। तेल-मसल्ला, तरकारी हाटेपर सँ लऽ आनब मुदा पंचकेँ दुइयो कौर दही नै खुएबैन से नीक हएत?"

"सौंझुका दूध अपनो रहत आ किसुनोसँ लऽ लेब। केते दूध पौड़बहक?"

"दू मन चाउर रान्हब। आधोमन तँ दही चाही।"

"अदहा मन सँ हेतह?"

"अपना सभमे दहीए केते परसल जाइए। गरीब लोक अन्ने बेसी खाइए। दूध-दही आकि फल-फलहरी खाइयो चाहत से आनत केतए-

सँ।”

“हँ, ई तँ ठीके कहलह। हम तँ कहबह जे तरकारियो किए हाटपर सँ अनबह। अखन तँ सबहक चारपर सजमैन-कदीमा आ बाड़ीमे भँट्टा अछिए। तइले पाइ किए खर्च करबह। औगताइमे अदौरी बनौल नै हेतह। बैगन आ अदौरी नै बनेबह से केहेन हएत?”

“मन होइए जे बड़-बड़ीक ओरियान करी।”

“तों सनैक गेलह हेन। बड़-बड़ीक घाटि केते मेठनियाँ होइए से बुझै छहक।”

“हँ, से तँ ठीके कहलह।”

“अखन जाइ छिअ। दहीसँ निचेन भऽ जाह। काल्हि दुपहरमे ने काज हेतह, आकि पुजौनिहारो औथुन।”

“अपना सभमे केते पुजौनिहारकेँ देखै छहक। जतिया आगू कोनो पतिया लगै छइ।”

भगिन-पुतोहु दालि दर्ड़ैले अबै छेली। डेढ़ियापर अबिते गुलटेनपर नजैर पड़लैन। मुँह बिजकबैत बजली-

“बुढ़ा, अपनो मरता आ दोसरोकेँ जान मारथिन। काल्हि-परसू ई सभ काज होइतै।”

कहि दालिक मुजेला लऽ जाँत दिस बढ़ली।

गोसाँइ डुमिते भजनाक संग सिंहेसरी पहुँचल। अपना माथपर पहिरैबला कपड़ा आ अल्लूक मोटरी आ भाइक माथपर चाउर-दालिक मोटरी। बिनु छँटले चाउर आ गोटे दालि। आँगन पहुँच सिंहेसरी कानल नहि, माए-बाप लग बेटीक कानब तँ सिनेहक होइ छइ। मुदा सिंहेसरीक मन तखनेसँ लहकल जखने भजना बरखीक चर्चा केलक। मनमे उठै जे अपना खुट्टापर लगहैर महींस अछि, बरखी सन काजमे जँ एक्को कराही

दही नै लऽ जाएब से केहेन हएत..?

ओसारपर मोटरी रखि माएसँ झगड़ा शुरू केलक-

“अँइ गे बुढ़िया, हमरा कोनो आए-उपए नइए जे काल्हि बाबाक बरखी छिऐन आ आइ तूँ अबैले कहलेँ?”

तैबीच गुलटेन सेहो हाटसँ आबि गेल। माथपर मोटरी रहबे करै तखने मुनिया सिंगहेसरीकेँ कहलक-

“दाइ, हमर कोन दोख, मासे-मास जे छाया करैत एलौं तेकर ठेकाने ने रहल। बापो तेहेन बिसराह छथुन जे बिसैर गेलखुन। आइए बुझलौं।”

माइक जवाब सुनि सिंहेसरीक तामस पिता दिस बढ़ए लगल। मुदा मुँह-झाड़ि बाजब उचित नइ बुझि माएकेँ अगुअबैत बाजल-

“जाबे बाबा जीबै छला ताबे केते मानै छला। आब जखन ओ नै छैथ तखन हुनकर किरिया-करम छोड़ि देबैन। एगारहो गोरेक तँ ओरियान करि कऽ अबितौं।”

बेटी आ पत्नीक बात गुलटेन चुपचाप सुनैत रहल। कखनो मनमे उठै जे गलती हमरे भेल। फेर होइ जे कोनो काज करै-काल ने उनटा-पुनटा भेने गल्ती होइ छइ। मुदा हम तँ बिसैर गेल छेलौं। ..सामंजस करैत गुलटेन बाजल-

“पाहुन किए ने एलखुन?”

सिंहेसरी बाजल-

“से तूँ नइ बुझै छहक जे नोकरिया-चकरियाक घर छी जे ताला लगा देबै आ विदा भऽ जाएब। दुनू परानी लगल रहै छी तखन तँ एक्को क्षणक छुट्टी नै होइए। ढेनुआर महींसकेँ छोड़ि कऽ दुनू गोरे केना अबितौं।”

बेटीक बात सुनि मुनिया बाजली-

“ऐ घर ओइ घरमे कोन अन्तर अछि। तोरा लिए जेहने ई तेहने उ। अहूठीम तँ दहीक ओरियान भइये रहल हेन। तइले तोरा किए मनमे दुख होइ छौ। हम तोहर माए छियौ। कोनो आइयेक छिऐ, आकि सभ दिनेक बिसराह छथुन। तइले तामस किए होइ छह। मोटरी सभकेँ खोलि-खोलि चीज-वौस ओरिया कऽ राखह। पहिने पएर धोइ गोसाँइकेँ गोड़ लगहुन।”

पत्नी आ बेटीकेँ शान्त होइत देख गुलटेन मुस्की दैत बाजल-

“गाममे जेकर काज हम केने छी ओ कि हम्मर नै करत। केते भारी काजे अछि।”

घरक गोसाँइकेँ गोड़ लगि सिंहेसरी पिताकेँ गोड़ लगैले बढ़ल कि गुलटेनक आँखि सिमसिमा गेल। सिमसिमाएल मने बाजल-

“बुच्ची, कोनो चीजक दुख-तकलीफ तँ ने होइ छह?”

हँसैत सिंहेसरी बाजल-

“बाबाक बात कान धेने छी। हाथ-पएर लड़बै छी, सुखसँ दिन कटैए।”

भोजमे खूब जश गुलटेनकेँ भेल। भरि-दिन एमहर-दौड़ तँ ओमहर-ताकमे दुनू परानी लगल रहल। मुनियाक छाती केराक भालैर जकाँ कँपैत रहलैन। बिना अन्ने-पानिक भरि दिन खटैत रहली। जेना भुख-पियास केतौ पड़ा गेल। मुदा भोजक जश दुनू परानी गुलटेनकेँ, जहिना ऊसर खेतमे कूश लहलहाइत तहिना लहलहा देलक। पिताकेँ सिंहेसरी कहलक-

“बाबू, सभ काज सम्पन्न भऽ गेल। आब अपनो सभ खा लए।”

खेला-पीला पछाइत गुलटेनक मनमे सिनेमाक रील जकाँ सभ काज नाचए लगल- ठीके ने लोक कहै छथिन जे जे जेहेन करत से तेहेन

पौत। जहिना बाबूक मन शुद्ध छेलैन तहिना ने हेतैन। आ-हा-हा! ओंगरी पकैड़-पकैड़ घर बन्हैक लूरि सिखौलैन! जीबले बारहो मासक काज सिखौलैन..!

मने-मन गुलटेन पिताकेँ स्मरण करैत गोड़ लगलक।

❑ **साभार : अर्द्धांगिनी**

दादी-माँ

सत्तैर बर्खक दादी-माँकेँ अखनो वहए चुहचुही गाममे बुझि पड़ै छैन जे चुहचुही सासुरमे सभकेँ बुझि पड़ैत। जइ दिन रंगल वस्त्र, भरल पेट, काजर लगौल आँखिसँ गाम देखलैन ओ जीते-जी केना बिसैर जेती।

ओना, दादी-माँकेँ परिवारमे दू पीढ़ीसँ मुखतियारी चलि अबैत मुदा पलखैतक दुआरे ऐ बातपर नजैरे ने कहियो गेलैन। कारणो अछि जे दू तरहक जिनगी लोककेँ भेटै छै, एककेँ बनल-बनाएल आ दोसरकेँ टुटल-फुटल। टुटल-फुटल घरकेँ दादी-माँ सभ दिन चिकने करैमे लागल रहली तँए सासुरक सुख दिस धियाने ने गेलैन। एक तँ औहुना जे कुरसीपर बैस जाइए ओ थोड़े बुझै छै जे कुरसीक पुवरियो पार छै आ पछवरियो पार। तँए जिनगीकेँ तीनू पार देखैक लूरि हेबाक चाही। मुदा से दादी-माँ केँ नइ छैन, परिवारक सबहक धौजैन सुनैक अभ्यस्त छैथ तँए आश्वासन तँ सभकेँ दइते छथिन मुदा जे पहिने बिसरै। सत्तैर बर्खक अपनाकेँ नै बुझि दादी-माँकेँ छोड़ल केचुआ जकाँ लहलही छैन्हे। तहूमे कोरा-काँखकेँ सभ दिन बच्चा सभकेँ लैत रहली तँए रहबो किए नै करतैन।

छह बर्ख पहिने परिवारमे एकटा गाए एलैन। जहिना मनुखसँ लऽ कऽ बाध-बोन धरि लक्ष्मी छिड़ियाएल छैथ तहिना दादी-माँ गाएकेँ बुझि सेवा करए लगली। थैर-गोबर अपन काजक सूचीमे लऽ लेलैन। छबे

बर्खक दौड़मे आइ दसटा गाए खुट्टापर छैन। पहिने एकटाकेँ थैर-गोबर करैक अभ्यास छेलैन अखन दसटा-क भऽ गेल छैन, किए मनक चुहचुही कमतैन।

ओना, अखन धरि सभ तूर परिवारक काजमे सटि चलै छैन मुदा दुनू पुतोहुओ आ भाइयोमे खटपट हुअ लगलैन से भनक छैन मुदा जेकरा जे मनमे हेतै से तेहेन पाऔत, तँए धैनसन। दुनू बेटो आ पुतोहुओक बीच उठैत विवादक कारण पिता–शिवशंकर–नीक जकाँ बुझैत रहथिन। जैठाम लाखक विधायक, सांसद, वेपारी, ठीकेदार करोड़मे कुदि अरबमे टहैल रहल अछि, तैठाम मनक उछाल सोभाविके। तँए शिवशंकर गुम्म छला।

जहिना दृष्टिकूट विश्राम बेर होएत तहिना दादी-माँकेँ बुझि पड़लैन। पति–शिवशंकर–सोझहासँ गुजैरते रहैथ कि दुनू बेटा, ताल ठौकैत पहुँचलैन। दुनू बेटाकेँ देख अधरस्तेपर दादी-माँ अँटैक गेली। शिवशंकर पुछलखिन-

“तोरा दुनू भाँइक बीच एना किए होइ छह?”

पिताक प्रश्नसँ दुनू भाँइ प्रकाशो आ जोगियो एक दोसरपर दोख मढ़ए लगल। तही बीच आँगनमे दुनू पुतोहुओ डंका पीटए लगली। शिवशंकर बुझि गेला जे अँगनेक आगि असमसान तक जाइ छइ। भार हटबैत शिवशंकर दुनू भाँइकेँ कहलखिन-

“माएसँ पुछि लहक?”

अपना-अपनीकेँ प्रकाशो आ जोगियो दुनू भाँइ बाँहि पसारैत दादी-माँकेँ पुछलक-

“माए, तूँ केनए?”

गरमाएल साँस छोड़ैत दादी-माँ बजली-

“केम्हरो नहि, अपने दिस।”

शिवशंकरो आ दादियो-माँ, दुनू बेकती विचारए लगलैथ जे समय एहेन दुरकाल बनि रहल अछि जे रातिक कोन बात जे दिनोमे सुरक्षित रहब कठिन भऽ गेल अछि, तैठाम घरेमे कुकुर-कटौज करत तँ जानत अपने। आब कि जीबैक कोनो लिलसा अछि, कमाइ छी खाइ छी।

❑ **साभार : बजन्ता-बुझन्ता**

कचहरिया भाय

कचहरिया भायकेँ देखते नीरस टोकलकैन-

"भाय, ओहूँकेँ कचहरिया-उतरी भरिसक नहियेँ उतरत?"

कचहरिया भाय आ नीरस लंगोटिया संगी। भरिसक नै साल तँ महिने, नइ महिना तँ दिने, नइ दिन तँ घन्टे-मिनटक नीरसे पैघ हेतैन। जिनका जनम-टिप्पैन लिखाएल हेतैन तिनका ने आ जिनका नइ लिखाएल हेतैन ओ तँ अपने टीपत...।

कचहरिया-भाय बच्चेसँ चँगला से नीरसमे कम छल। जहिना बौगला पोखैर वा पानिक किनछैर धड़ैत तहिना एकठाम रैन-बसेरा रहितो कचहरिया-भाय कचहरीक लाट पकैड़ लेलकैन। नीरसक प्रश्न कचहरिया भाइक मन हौंर देलकैन। दुनियाँ बड़ीटा छै, झूठ-सच चलिते रहतै। चलबो केना नै करतै, कोनो की अन्हार-इजोत एकदिना छी जे ओरा जाएत? तखन तँ भेल जेतए छी तेतए कुहेसकेँ भगा कऽ राखी। तहूमे नीरस लंगोटिया भैयारी छी, कोन दिनक कोन गप एहेन हएत जे नै बुझल हेतैन। रसे-रसे मनकेँ सोझ करैत बजला-

"बौआ नीरस, रहल तँ रस नइ तँ बेरस। आब अपना सभ अन्तिम घाटक घटवार भेलौं। भगवान तोरा सन बेटा सभकेँ देथुन जे कन्हाक

भार उताइर अपना कन्हापर लऽ लेलक।"

आगूक बात बजैले कचहरिया भाइक ठोर पटपटाइते रहैन कि बिच्चेमे नीरस टोकि देलकैन-

"अहाँक बेटा की दब छैथ?"

जेना कचहरिया भाइक छाती चहैक गेलैन। फुटल कसताराक दही जकाँ मुहसँ निकललैन-

"रसगुल्ला रसक चहैट शुरूहेसँ लगि गेल जे अपनो बुझै छी। हलवाइक कुकुर जकाँ एक्कोटा रुइयाँ देहमे नै अछि मुदा चहैटो तँ चुहैट कऽ चोहटबे करत।"

बाल-बोध जकाँ नीरस मनकेँ फुसलबैत-बहलबैत कहलकैन-

"अच्छा भाय, एकटा कहू जे जुआनी आ बुढ़ाड़ीमे की बुझि पड़ैए?"

सह पबैत कचहरिया-भाय भगैतक पलगाँइ जकाँ बजला-

"गेल रे जुआनी फेर केतए पएब!"

नहलापर गुलाम फेकैत नीरस भाय बजला-

"कृपा पाबि कियो मूकसँ वाचाल बनैए तँ कियो वाचालसँ मूक..!"

मुड़ी डोलबैत दुनू गोरे जिनगीक कुंज भवनमे घुमए लगला।

❑ **साभार : बजन्ता-बुझन्ता**

एक दिन

चौमुहानीपर ठाढ़ भेल कोनो यात्रीकेँ जहिना चारू दिससँ अबैत गाड़ी-सवारी बाट रोकि दैत, तहिना लाल भायकेँ सेहो भेलैन। एक संग चारिटा काज आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेलैन। ओना, जँ चारू काज आगू-पाछू रहैत तरखन तँ कोनो प्रश्ने नहि भेल, मुदा से नइ एक समयमे चारू काज चारि दिससँ चौमुहानीपर ठाढ़ भेल यात्री जकाँ घेर लेलकैन। करब चारूकेँ छैन, छोड़ैबला एकोटा ने। निराश भेल लाल भाइक एक मनकेँ दोसर मन आस दैत कहलकैन»

“अरे, धीर मन चल।”

कानमे पड़िते लाल भाइक मन सुगबुगेलैन। सुगबुगाइते बुझि पड़लैन जे चारू काजकेँ सेरिया-बटिया पकैड़ करब तँ समैयक संग चारू काज निमाहि लेब। मुदा जहिना एकटा पढ़ल-लिखल लोक सन विचारमे विचरन करैत अबोधो सबोध बनि निच्चासँ ऊपर तक, पेनीसँ कान तक वा जड़िसँ छीप तक देख लइए तहिना लाल भाइक मन देखलकैन तँ मुदा बच्चासँ कौलेज तकक बीतल जिनगीक काजसँ भेँट नइ भेने जहिना पहाड़ बनि अज्ञान जिनगी आगूमे ठाढ़ भेल रहैए तहिना लालो भायकेँ भेबे केलैन। एक संग आएल चारू काजकेँ तहियबैत-सरियबैत पहिल नम्बरक काज अगुएलैन। पोती बिआहक काजक अन्तिम प्रक्रिया

काल्हि नइ सम्पन्न भऽ जाएत तँ एकेटा दिन बिआहक आगू शेष अछि, साले सम्पन्न भऽ जाएत! सालक महतपूर्ण परिवारिक काज पूर नइ भेने परिवार तँ धकाल खेबे करत। आगू सालक तँ आगू काज अछि, तइमे जँ पैछला सालक महतपूर्ण काज छुटि जाएत, जइमे अर्थक खर्च संगे समैयक खर्च सेहो हेबे करत। जखने से हएत तखने ऐगला साले अ-असथिर भऽ जाएत! तखन? मुदा उलझनो तँ असान नहियेँ अछि। बेटीक बिआह पिताक माथक केहेन बोझ बनि ठाढ़ भऽ गेल अछि, सबहक सोझहेमे अछि।

लाल भाय अपन मनकेँ केतबो उत्साहित करैथ तैयो एक्काक घोड़ी जकाँ पएर पाछू घुसैक जाइन। घुसैक ई जाइन जे रहक समाजेमे अछि, समाज दिशाहीन बनि कन्यादानकेँ पहाड़ बना आगूमे ठाढ़ कऽ लेलक अछि, कन्यादान केतए हुअए, केना हुअए तइमे पुरना घटक सभकेँ गरदनियाँ दैत नवका घटक सभ भऽ गेला अछि। जहिना शीशोक गाछ वा अन्य ओहन गाछ जे जिनगीक संग-संग अपनामे शीलपन सिरजए लगैए जे सारील रूपमे जेते जुआइए तेते चमकैए तहिना विचारक बोनमे वौआइत-वौआइत लाल भाइक मन ऐठाम आबि गेलैन जे आइ कन्यादानक दिन पक्का कऽ काल्हि बिआहक पूर्वक अन्तिम प्रक्रिया पूरा कऽ नेनाइए।

व्रतक संग लाल भाय विचारकेँ काजक मुड़ी पकैड़ ऐगला सूचीमे रखलैन। एक काजक विचारक पाराग्राफ समाप्त होइते कथाक दोसर पाराग्राफ जकाँ दोसर काज धाँइ-दे विचार करए आगूमे खसलैन।

लाल भाइक आगूमे दोसर काज ई खसलैन जे आइ चारि बजे भोरे एकटा संगीक फोन आएल रहैन जे फल्लाँ संगी रहैत हमरा केण्डिडेटक विरोधमे काज कऽ रहला अछि। बिनु किछु जवाब देनहि लाल भाय फोन रखि नेने छला।

लाल भाइक जिनगी बहुआयामी छैन, जइमे गौ-पालन सेहो छैन। अपनो मन गवाही दैते छैन जे गौ-पालनेसँ ने गोबरधन पूजाक पाबैन सेहो होइए जइसँ अन्न सबहक बखारीमे अन्न भरल रहैए। गौ-पालनेसँ ने गजधन सेहो भेटै छै आ गौमुखी विचारक धार सेहो सदिकाल प्रवाहित होइए। मुदा प्रश्न एतबे नइ अछि।

प्रश्न अछि पौष्टिक अहार-ले दूधक जरूरत अछि, जे औत गाए-महींसक पालनसँ। मुदा ओ पलाएत केना से नान्हिटा प्रश्न नइ अछि। गाइक पालन-ले घासक जरूरत सेहो होइ छै, एक-आधटा जँ पोसौ चाहब ओकरो-ले घास चाही। बारहो मासक घास-ले खेतक संग पानियोंक जरूरत होइ छै, तैठाम एक दिस खेतक समस्या अछि, समस्या ई जे जिनका बेसी खेत छैन हुनके नमहरका नोकरी सेहो छैन। अपने की करता, केमहर करता? माल-जालक घास-ले बँटाइयो खेत के देत? हुनका ओइ घाससँ की भेटतैन। तँए गम्भीर प्रश्न अछि। एक दिस गामक बेरोजगार युवक गामसँ पलायन कऽ रहला अछि तँ दोसर अनुकूल परिस्थिति पैदा नइ हुअ देल जा रहल अछि।

गाइक सेवासँ जुड़ल लाल भायकेँ जहिना सम्बन्ध गाए-मालक डॉक्टर डा. किशोरीसँ तहिना दवाइ दोकानदार-साहित्य प्रेमी गोपीकान्तसँ सेहो जुड़ल छैन। मुदा जिनगी बहुविधि काजक सम्बन्धो तँ बहुविधि लोकोसँ हेबे करत। तँए अपन-अपन जिनगीक सीमा होइ छै जे लक्ष्मण रेखा सदृश होइ छइ। गोपीकान्तेक फोन लाल भायकेँ डॉक्टर किशोरीक सम्बन्धमे आएल छेलैन। एक दिस जहिना पंचायतक वार्ड सदससँ लऽ कऽ सरपंच, पंचायत समिति, मुखिया, जिला परिषदक चुनावक सुगबुगाहट बिहारमे अछि, तहिना केते राज्यमे एम.एल.ए.क सेहो छइहे। सौंसे देशेमे जखन चुनावी माहौल बनल अछि तखन अखन तँ बिहारक बच्चा-बच्चा घरक मुहथैरपर बैसल अछि..! एकाएक लाल भाइक मनक विचार मन पड़लैन। मन पड़लैन ई जे जखन भोँट खसाएब छोड़ि देलौं,

राजनीतिक मंच छोड़ि देलौं, तखन अनेरे गोपीकान्तक प्रश्न मन रखने छी। गाए पोसै छी, तँए डॉक्टर किशोरीसँ सम्बन्ध बना रखै पड़त, तहिना तँ गोपीकान्तो दवाइ-ले भेला, जहिना लाल भाइक सम्बन्ध गोपीकान्तसँ छैन तहिना गोपीकान्तोक सम्बन्ध डॉक्टर किशोरीसँ छैन्हे। तीनू गोरे तीनू गोरेक परीचितेमे छैथ।

एहेन स्थितिमे की करब से लाल भाइक मनमे एबे ने करैन। तहूमे सेकरेट मेटर छी, तीनियेँ गोरेक बीचक बात छी, तहूमे तीनू बुधिजीविये छी। जँ कोनो हवामे कनियोँ गन्ध निकैल जाएत तँ तीनूक बीचक सम्बन्ध कसाइन-कसाइन भऽ जाएत! तँए केकरोसँ पुछलो केना जाएत? जहिना सभकेँ होइ छै जे अन्हारमे चलैत-चलैत अन्हार कम हुअ लगै छै आ आँखिक इजोत बढ़ए लगै छै, जइसँ किछु फरीच देखए लगैए तहिना लाल भायकेँ भेलैन। नजैरकेँ फरिच होइते मन कुदि कऽ कहि देलकैन»

"जाबे प्रश्नक जड़ि नइ पकड़ब ताबेक जवाब अधखिजुए रहत।"

लाल भाइक एक मनक विचारमे दोसर मन अपन जिज्ञासा रखैत बाजल»

"अखन तँ गामक वार्ड सदससँ लऽ कऽ अमेरिकाक राष्ट्रपति तकक चुनावी माहौल अछि। मुदा लोक तँ अपन अधिकारक प्रयोग अपने करत ने। तहूमे विदेश-देशक बात जे गामो-घरमे अधिकार चाहे विकाउ भऽ गेल अछि चाहे ठकक ठकैती भऽ गेल अछि! एहेन स्थितिमे लोक अपन जीबैक बाट तँ अपने ताकत ने। भोँट खसबैक देखौआ प्रयोगमे एकटा अछि, ओ अछि नोटा भोँट। जेकर माने अछि जे हमरा मनोनुकूल या तँ राजनीतिक दले ने अछि वा दलवाहे ने अछि। भाय, जेहेन भगता रहत तेहने ने डलवाहो रहतै। एहेन स्थितिमे जँ अहाँ नोटा भोँट विचारि कऽ खसबै गेलौं आ केण्डिडेट सबहक एजेन्ट बुथपर नइ देखत? देखबे करत। जखने देखत तखने सभ अपना-अपना गिरहतकेँ

नइ कहत जे फल्लाँ भाय फल्लाँकेँ देख मुसकिया देलैन आ हमरा दिस तकबो ने केलैन? तखने ने सबहक मन गवाही देत- 'फल्लाँ फल्लाँकेँ भोँट देलखिन।"

जखने से भेल तखने लाल सागरमे खसब कि कारी सागरमे आकि प्रशान्त महासागरमे पहुँचब तेकर कोन ठेकान? मुदा जहिना बेसी खेलापर ढकार हुअ लगै छै तहिना लाल भायकेँ पेटसँ निकललैन»

"जे मंच छोड़ि देलौं पुन: जाएब नीक नइ। हँ! ओइ विषयक जे आगूक मूल छै, तेकरा पकैड़ चलब अछि।"

ढकारक पछाइत जहिना सबहक मन-पेट हल्लुक होइए तहिना लाल भायकेँ सेहो भेलैन। असथिर होइते मन पड़लैन»

"फोनमे गोपीकान्त की कहने छला? एतबे ने जे डॉक्टर किशोरी हमरा केण्डिडेटक विपरीतमे दोसर केण्डिडेटक संग दइ छैथ?"

असथिरसँ मने-मन लाल भाय विचार करए लगला। बहुआयामी जिनगीमे परिवारसँ लऽ कऽ देश-विदेश तक सम्बन्ध बनैए आ टुटैए, तैठाम अनेक रंग सखा-सम्बन्धित सेहो होइते छै, मुदा हमरा तीनू गोरेक बीच चुनावीक सम्बन्ध तँ नहियेँ अछि। ओ दुनू गोरेक माने डॉक्टर किशोरी आ गोपीकान्तक बीचमे कोन-कोन तरहक सम्बन्ध छैन, से केना बुझब? एहेन अनभुआर जगहमे अपने हेरा जाइ ईहो तँ उचित नहियेँ हएत। डॉक्टर किशोरीक गौंआँ केण्डिडेट छिऐन, पुश्तैनी केहेन सम्बन्ध रहलैन.., हमरा चलैत जँ ओइपर कोनो अवघात हएत, ई नीक नइ। जहिना विचारक सीमान होइ छै, जैठाम दोसर-तेसर आड़ि-मेड़ रस्ता-पेरा होइ छै तैठाम तँ लोक अपने नजैरसँ हिया कऽ देख अपने ने डेग बढ़ौत? विचारक पराग्राफक छीप लग पहुँचबो ने लाल भाय केला कि बिच्चेमे एक मन कहलकैन»

"भने सेकरेट मेटर छी, एकरा जँ बेसी सेकरेसी दऽ देबै तखन ओ

आरो बेसी सेकरेट भऽ जाएत, तँए नीक हएत जे जहिना आन-ले तहिना जँ डॉक्टर किशोरियो बाबू-ले सेकरेटे बना ली, ओ बेसी नीक हएत।”

अपन पहिल मन तँ लाल भाइक मानि गेलैन मुदा दोसर मन टोकि देलकैन»

“जँ गोपीकान्त तगेदा करैथ तँ?”

पहिल मन बाजल»

“की तगेदा करता यएह ने अहाँ जे कहने रहितिऐन तँ ओ आबि कऽ अपन गलती सुधार करितैथ, से नै केने हेतैन सएह ने?”

दोसर मन बाजल»

“समदिया बना समाद देलैन आकि सिपाही बना कहने छला जे पकैड़ कऽ नेने आउ! भेँट करैन वा नइ करैन, ई तँ किशोरीजीक मनक विचार छिऐन ओइमे हम केतए छी?”

नीक जकाँ निर्णए कइये ने पेने छला कि जहिना दाहा पाबैनक उपलक्षमे मरसिया गबैकाल गौनिहार गबैए जे ‘एक मरसिया खतम हुआ है दोसर शुरू होता है’, तहिना लाल भाइक मनमे तेसर काज कुदि कऽ खसलैन। खसिते मन बजलैन»

“काल्हि तँ सर-पोतीक बिआहक बरियाती औत, नौत-लियौन भेल अछि?”

जहिना भारी मोटा देख मोटैत वा सवारी भरल सवारीक घोड़ा हदिया जाइत जे उठाएब कठिन अछि, तहिना लालो भायकेँ भेलैन। अक्-बक् दुनू बन्न भऽ गेलैन। खग जानए खगक मन-बात। चाहे ओ चिड़ै रूपमे बुधि हौउ आकि खगल रूपमे खगाएल खग। गंगाकातक लोक सभ दिन गंगेमे नहाइ छैथ आ दूर हटल लोककेँ मनेमे रहै छैन जे ‘गंगा नहाएब’ तँए कि गंगा नहाएबक सभटा धरम सबदिने नहेनिहारकेँ भऽ जेतैन आ शेष बाँकी किछ रहबे ने करत जे दोसर-तेसरकेँ हएत..?

बोझ-तर दबल लाल भाइक मनमे ‘सासुर जा हएत कि नइ जा हएत’ ऐ सुरागमे अपन विराग-मन ठेलि देलकैन। ठेलाइते मन फुनफुनेलैन»

“सासुरक चारिम पीढ़ीक विआहक उत्सव छी, चारि पीढ़िक सर-सम्बन्धी सभसँ भेँट-घाँट हएत, आरो नीक-बेजा जे हौउ मुदा जीवित भेँट तँ हेबे करत। तेकरा छोड़ब नीक हएत? आइक परिवेशमे लोक रस्ते-पेरे बिआह रचि माइयो-बापकेँ नहि निमंत्रित करै छैथ, मुदा संस्कार आ संस्कार गीत वएह गबै छैथ! यएह तँ छी आजुक परिवेश! जे परिवेश जेकरा-ले जे हौन मुदा अपन परिवेश जँ अपना मनोनुकूल बना नइ चलब तखन ओइ बीचमे स्वतंत्र अधिकारक महौते की?”

ई बात मनमे अबिते लाल भाय विचारि लेलैन जे नौत पुरए काल्हि सासुर जरूर जाएब। मुदा लगले जहिना रथक घोड़ाक मुखारी पाछूसँ खिचाइते घोड़ा ठमैक जाइए तहिना लालो भाय ठमकला।

एक दिस घर-परिवारक काजसँ बोझिल लाल भाय, तैपर सर-सम्बन्धीक बोझ सेहो आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेलैन। बिआहक नौत छी, रौतका प्रमुख काज छी, माने बिआह। ओ काज एक दिस महिला सबहक छिऐन, दोसर दिस बरियातीक सनोमान करब जइमे बरियातीकेँ खुएनाइ-पीऔनाइ आ यज्ञक अन्तिम प्रक्रिया बर-कनियाँकेँ अरियाति कऽ विदा करब अछि, जे यज्ञक फल भेल, ओ काज सभसँ उपयुक्त तँए ओइ समयपर जरूर पहुँचब अछि। बीचक जे किछु प्रक्रिया भेल ओइमे जँ कमी-बेसी भेल, ओकरो विदाइ करैत ने नव सम्बन्ध स्थापित हएत।

जिनगीक क्रियाक सरियाइत काज देखते लाल भाइक मन टुसिएलैन। टुसियाइते बुदबुदेलैन»

“जँ भरि दिनक काज गर अँटि जाए, मात्र करबटा बाँकी रहल, तँ वएह ने शुभ लग्न भेल। आइ केते खर्च अछि जे हएत, जँ तेते पाइ

जेबीमे रहत तखन अनेरे जे चिन्तासँ मनकेँ दबने रहब, ओ चिन्ता प्रिय, माने अनेरो मनकेँ भरिएने रहब, लोकक वृत्तिक आवृत्ति भेलैन। भाय, काल्हि-ले काल्हि छै, आइ थोड़े काल्हि छी। काल्हि तँ भविस भेल, वर्तमान ने वीर्तमान भेल जेकर कीर्तमान बनबैक अछि।"

मन असथिर करैत लाल भाय आगू बढ़ैक विचार करिते रहेथ कि समधौत आबि गोर लगलकैन। मुँह उठा असिरवाद दैत पुछलखिन»

"बाउ, की हाल-चाल अछि?"

तइ बिच्चेमे समधौत बिआहक कार्ड आगूमे बढ़ा देलकैन। कार्ड खोलि पढ़ला तँ काल्हिये छोट भाएक बिआह छिऐन, तेकरे नौत-हकार-ले आएल छेलैन।

कार्ड पढ़िते लाल भाइक मन मन्हुआ लगलैन। मन्हुअए ई लगलैन जे एना जँ काजक उपरौज हएत तखन आदमी कइये की सकैए? बिआह सन संस्कारमे संस्कार भरैक अछि, असिरवादक अवसर छी आ तैठाम जँ जाइये ने पएब तखन हएत केना? गनल-गूथल सर-सम्बन्धी कुटुम-परिवार छैथ, एना किए सभ एके दिन काज बेसाहि लेलैन। लगले सूरमे माने विचारक कड़ीमे मने-मन निर्णय कऽ लेलैन जे जे पहिने विचारि नेने छी, से करब, तँए कहि दिऐन। अही असमंजसमे लाल भाइक मन ओझराएल रहैन कि बिच्चेमे समधौत कहलकैन»

"पापा, कहलैन अछि जे अपने जरूर उपस्थिति दर्ज कराबिऐ।"

समधौतक आग्रह सुनि लाल भाइक मन पीड़ित जकाँ पीता गेलैन। भेलैन जे ठाँहि-पठाँहि कहिऐन जे एना अनेरे सभ कियो माने सभ सम्बन्धी एके दिन किए काज ठेक लेलौ। मुदा बाल-बोध लग बजलो केना जाए। तँए लाल भाय चुपे-चुप रहैथ मुदा मन मन्हुआइत रहैन। तइ बिच्चेमे समधौत कहलकैन»

"बाबूजी, धड़फड़मे काज ठीक भेल तँए धड़फड़ीमे एना भेल।"

काजक असथिर प्रक्रियाक बीच धड़फड़ी सेहो कहियोकाल समयानुसार आबि जाइ छै, सभ माए-बाप चाहैए जे जेते जल्दी बाल-बच्चाक बोझ माथपर सँ उतैर जाएत ओते जल्दी ने बाल-बच्चाक कर्जासँ छुटकारा भेटत। जिनगीक बहैत धारमे एतबे ने जरूरी अछि जे माता-पिताकेँ पार लगबैत श्रद्धा-सुमन दैत बाल-बच्चाकेँ घर बसा कऽ जिनगीकेँ स्वतंत्र बना ली।

समधौतकेँ आग्रह करैत लाल भाय कहलखिन»

“बाउ, आइ रहि जाउ, कनी निचेन होइ छी, तखन नीक जकाँ गप-सप्प करब।”

लाल भाइक मनमे रहैन जे अपने जइ काजक सूत्रपात करए जा रहल छी, तइमे दुनू गोरे माने सासुरक सारो आ समधियौरक समैधो, काजक अन्तिम दौड़मे पहुँचल छैथ, तँए किए ने एक सर-सम्बन्धीक परिवारमे काजक की दूरी अछि आकि नजदिकी। जाबे से नइ बुझब ताबे सर-सम्बन्धीक बीच दब-उनार होइते रहत जइसँ किछ काज प्रमुख आ किछ गौण होइत रहत, जे विचारक दिशाकेँ झकझोरत। लाल भाइक मन औनए लगलैन। तैबीच कानमे समधौतक ई बात सेहो आबि गेलैन»

“अखन काजक धुमसाही अछि, बहुत ठीमन जाइक अछि नइ अँटकब।”

कहि समधौत मोटर साइकिल पकैड़ लेलक। दरबज्जा तक अड़ियबैत लाल भाय बजला»

“जखन सभ अपने सिरे नचे छी, तखन अपन-अपन सम्हारू।”

❑ **साभार : गाछपर सँ खसला**

कथाक्रम : पंचदेव (1-100)

एक तम्मा सिदहा	वर्थ डे
एक घोंट पानि	सजल स्मृति
करतब	सेहन्ता
पहाड़क बेथा	धोखा
उदय-प्रलय	एक मुठी घास
खेतक बँटवारा	डुमैत जिनगी
पैंतीस साल पछुआ गेलौं	हूसि गेल
माघक चाह	ठेलाबला
घबाह ट्यूशन	जीविका
चोर-सिपाही	धर्मनाथ
उरीन	किरदानी
गुणहीन	भरमे-सरम
बड़की माता	धोखा केतए भेल
पोखला कटहर	मीनी भ्रष्टाचार
राकशे रहि गेलौं	सोमनाकाका
मुफतिया माल	पटियाबला
हेराएल जिनगी	रिक्साबला
करिछौंह मुँह	पसेनाक धरम
कियो ने पुछैए	दूधबला
अँगनेमे हेरा गेलौं	केना जीब?

सझिया खेती
सतभैंया पोखैर
दनियाँ डाबा
अर्जुन रोग
दोसराइत

उकड़ू समय
अवाक
कलंक : 1
बताहे बताह बनौलक
भैयारी हक

केकरा-ले केलौं
केकरो कियो ने
टुटली मरैया
बगबाइर
अपन मन अपन धन

एक धाप जमीन
भैयारी
साझी
सूदि भरना
सीमा-सरहद

चुनवाली
रेहना चाची
बुधनी दादी : 2
पुरनी नानी
एकबोलिया दादी

लछनमान
बिटगरहा
गलफूलू
लाही
पल भरि

छातीक हार
कोढ़िया सरधुआ
पहपैट
भोरक सपना
खोंटकर्मा

गपक पियाहुल लोक
धरमूदासक अखड़ाहा
हमरा नीक नहि लगैए
कर्ज : 1
आब नइ आगि लगैए?

घूर

एगच्छा आमक गाछ

प्रीगर शत्रु

दहेजुआ गाए

गठूलाक गारि

गण्डा

अब-तब

झूठे

उजगी

जेना हाथी रही

कनी हमरो सुनू

नोकरिहारा

अनका बेर ओंघी

लगबे ने कएल

ओ दिन

पान पराग

फोंक मकड़

झकास

ठोररंगू

हकार

ओझरी

दोती बिआह

कचहरिया रोग

नटकिया गति

भारीपन भार बनि गेल

दिन घटि गेल

पछताबा

परिवारक प्रतिष्ठा

पागलखाना

खाए चाहैए

गामे उपैट गेल

खतियाएल घर

किछु ने फुरैए

तिलकोरक तरुआ

पटोर

बेटाक चलैत

उग्रघारा

बेटीक कुभेला

दोहरी हाक

खिलतोड़

जिगेसा
लेहाज
जानक मोल
समर्पण
स्तब्ध

भोरक झगड़ा
शालीनता
पान
पवनक विवेक
हरवाहि

समरथाइक भूत
समता
सुखाएल सूरत
खजाना
मौसी

कर्ज : 2
टुटल मनक जुटान
ऐँठ साड़ी
अस्तित्वक समाप्ति
जाति नहि पानि

विदाइ
कर्तव्यपरायन सुगा
निशाँ
दान-दैछना
माइक वचन

मथाहाथ
पाइक मोल
गंजन
नमहर फेरा
अपन काज

बेटपन
उमेद
एकोटा ने
कथनी नै करनी
मुसाइ पण्डित

घरवास
भूल
बत्तीसोअना
पुरनी भौजी
अर्द्धांगिनी

पेटगनाह
गंगा नहेलौं
बकठाँइ
गुलेती दास
खर्च

डीहक बटबारा
मूलधन
छूआ
लफ साग
नहरकन्हा

डॉक्टर हेमन्त
मनुखक मूल्य
तीन जुगिया भाय
आश्रम नहि सोभाव बदली
मायराम

अपन सन मुँह
पाप आ पुण्य
चोरक चोरबती
मातृभूमि
कटा-कटी

शुभचिन्तक
विधवा बिआह
वैष्णवी भगवती
प्रेमी
शंका

हरदीक हरदा
बेरपर
झगड़ाउ-झोटैला
फॉगु
बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक

मुइलो बिसेबैन
प्रतिभा
केतौ नै
हमर कोन दोख
असगरे

उलबा चाउर
पतझाड़
धरम काँट
तिलासंक्रान्तिक लाइ
कठफल

असहाज
बाबा बेलेश्वरनाथ
भौँटक गहमी
जेतए जे हौउ
नौमीक हकार

एकतीस मार्च
अगिलह
स्वर्ग आ नर्क
पीरारक फड़
मनकेँ फुसलबै छी

अकास दीप
माघ नहाइले जाएब
अतहतह
चौरचनक दही
तेतर भाइक कविता

अपन रोपल गाछी भुताहि
डभियाएल गाम
अखरा-दोखरा
गाछपर सँ खसला
सोनाक सुइत

बेटीक लिलसा
पुरान साड़ी
अभिनव अनुभव
अड़िकट्टा चोर
उझट बात

बहिन
मर्माहत
अलपुरिया बरी
दुधियाएल बरखा
चोरूक्का झगड़ा

त्राहि-कृष्ण
संकट
काँच सूत
बीरांगना : 2
सोग

विघटन
बगदल गाम
कलंक
उनटन
विद्गताक मद

क्रान्तियोग	अनेरुआ बेटा
पाही पट्टी	कछमछी
गोहाइर	समदाही
मरियाएल मन	वारंट
मदैत नै चाही	एकाग्रचित
बोनिहारिन मरनी	गलगर भैंस
आशापर पानि पड़ल	प्रवल इच्छा
बुढ़िया दादी	अधखरूआ
बाबी	मोहरा
बुधनी दादी : 1	भँसियाएल बाल-बोध
क्रियाशील	दूटा पाइ
समझौता	अपने केलहा
रत्न गमेवाक दुख	समुद्री विद्या
भाइक सिनेह	बीरांगना : 1
हारि	अनुशासन
जाम	बिहरन
विदाइ-दैछना	हारि-जीत : 1
टाइपिस्ट	अपसोच
गजपट खेती	अपन पुरखाक डीह
सुआद	खलओदार

पढ़ल सुगा बौक
गेल माघ उनतीस दिन बाँकी
मान
बालमण्डली
नीक बोल

कियो ने
स्वरोजगार
झिसीक मजा
लतियाएल जिनगी
सजमनियाँ आम

त्रिकालदर्शी
सड़ल दारीम
बटखौक
स्मृति शेष
बिसवास

हाथी आ मूस
गामक बान्ह
पनचैती
भबडाह
दूरी

गामक मुँह फेर देखब
गुड़ा-खुद्दीक रोटी
चौकीदारी
देव उठान
अनदिना

सुमति
आशापर पानि फेर गेल
चर्मरोग
केतौ ने रहलौं
मुँह-कान

बाबाक बाग-बगिया
पुरस्कार
फुसियाह
गामक सुरता
कचोट

जेकर चुन तेकर पुन
एते दिन अपना-ले आब अनका-ले
रमैत जोगी बोहैत पानि
पनचैती पनपना गेल
जेठुआ गरदा

खसैत गाछ
केते लग केते दूर : 2
कुघाटक मृत्यु
ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल
मुड़ियाएल घर

उचितवक्ता
हारि-जीत : 2
हँसीएमे उड़ि गेलौं
मनोरथ
धरती-अकास

विचार हेरा गेल
घर तोड़ि देलिऐ
आजुक जिनगीक आइ परीछा
दोहरी मारि
धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!

डकरा हाल
सीरक गाछ
परतीहा खढ़
गरदैन कट्टा बेटा
कर्जखौक

सुरता
सगहा
पकिया चेला
अनगढ़ चेतना
धोतीक मान

चुप्पा पाल
जन्मतिथि
दियरबा-भैंसुर
फज्झैत
भुतलग्गू आकि भविसलग्गू

सिरमा
मनुखदेवा
अप्पन-बीरान
सुभिमानी जिनगी
मरूभूमि

मइटुग्गर
आने जकाँ
उमकी
मुँहक खतियान
ओसार

५-५ टा कथाक १०० संग्रहक ई पंचदेव शृंखला मैथिलीमे पॉकेट-बुक्सक कमीकेँ पूर्ण करत। जतेक पन्ना, ततेक दाम, मोटामोटी दस-दस पन्नाक कथा। से पढ़ैयोमे सुभितगर आ कीनैयोमे सस्ता। एक उखड़ाहामे एकटा पॉकेट बुक्स खतम भऽ सकए, से साएगो पोथी साए उखड़ाहाक खोराकी भेल। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ बीछल ऐ सभ रचनाक विषय-वस्तु अहाँक सामाजिक ज्ञानकेँ मोनो पाड़त आ बढ़ेबो करत आ अहाँकेँ सामाजिक प्राणी हेबाक बोधो कराएत। अहाँकेँ अधिकारक संग कर्तव्यक स्मरण कराएत, सरोकारी बनाएत। आ ई सभ मनोरंजनक संग भेटत। मैथिलीक ई पहिल पॉकेट-बुक्स सीरीज स्वागत योग्य अछि। **-गजेन्द्र ठाकुर**

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचना संसार : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर-नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक, 71. दिवालीक दीप, 72. अप्पन गाम- लघु कथा संग्रह।

₹ 50

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

9 789388 421683